सेवा धर्म सर्वोपरिः आचार्यश्री महाश्रमण

आमेट में 148 वें मर्यादा महोत्सव का आगाज, विद्यालय मैदान खचाखच भरा, सैंकडों साधु-साध्वियां और हजारों श्रद्धालु बने पहले दिन के कार्यक्रम के साक्षी

आमेटः 28 जनवरी

तेरापंथ धर्म संघ के ग्यारहवें अधि-ाास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने सेवा को सबसे बडे धर्म के रुप में परिभाशित करते हुए कहा कि बडे पदों पर आसीन पदाधिकारियों को भी कभी सेवा का मौका आए तो उसका पूरा लाभ उठाने का प्रयास करना चाहिए। जिसकी अपेक्षा हो उसकी सेवा करने का प्रयत्न होना चाहिए। सेवा में संकोच कैसा? यह तो महान काम है। उन्होंने यह विचार आमेट नगर के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मैदान प्रांगण में :ानिवार दोपहर को प्रारंभ 148 वें मर्यादा महोत्सव के पहले दिन दे-ाभर से समागत श्रावक-श्राविकाओं को प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए व्यक्त किए। उन्होने कहा कि सेवा से तीर्थंकर नाम गोत्र का बंधन है। सेवा के दोनों लाभ इस :ाब्द में है। जिस समय सेवा की अपेक्षा है उस समय हमें इसके लिए तत्पर रहना चाहिए। सेवा पाना महान बात हैं अग्रणी को सेवा के काम में किसी तरह का संकोच नहीं करना चाहिए। मुझे अच्छा लगता है कि अग्रणी भी सेवा काम में हमे-ाा तत्पर रहते है। स्वास्थ्य की अनुकूलता हो तो अग्रणी को भी गोचरी करनी चाहिए। अग्रणी चाहे गुरुकुल में हो या पादविहारी, उसे गोचरी पर जाना चाहिए। इससे सहयोगियों को सहयोग, :ारीर के लिए बेहतर और गांव के लोगों की संभाल भी हो सकती है। इस दौरान ज्ञान और धर्म की बातों की जानकारी भी मनुश्य को दी जाती है। यह प्रेरणा देने का एक माध्यम भी है। मृदुग्लान सेवा का कार्य हमारा महान कर्तव्य है। संघ की :ारण में है। चाहे उनकी प्रवृति कैसी भी हो उनकी सेवा करना हमारा धर्म है। सेवा में पिछला संबंध प्रायः गौण रखने की प्रवृति होनी चाहिए।

भेदभाव को खत्म करती है सेवा

आचार्यश्री ने सेवा को :ाा-वत धर्म के रुप में परिभाशित करते हुए कहा कि यह लोगों में परस्पर भेदभाव को समाप्त करने का अच्छा प्रयास है। सेवा का भाव औपचारिक है तो यह भी अच्छा है। कम से कम उसके मन में इस तरह का भाव तो पैदा हुआ। सेवा से चित्त समाधि मिलती है। सेवा करना तो बहुत गहन हैं। संघ के लोगों को कभी अत्राण का अनुभव नहीं हो। हम संघ के सेवक है। हमारे में लेने की अपेक्षा दूसरों को कुछ देने की इच्छा होनी चाहिए। हमारे संघ में साधु-साध्वियां और श्रावक समाज लगातार सेवा करता आ रहा है। इसके लिए वे साधुवाद के पात्र है, लेकिन आव-यकता इस बात की है कि इसमें ओर भी विकास किया जाए। सेवा की भावना पुश्ट होनी चाहिए। हमारा धर्म संघ गौरव-ाली स्थिति में है। हमारे पुरखों ने हमारे में ऐसे ही संस्कार का बीजारोपण किया है। यह हमारे प्रेरणास्त्रोत बने हुए है।

मर्यादा स्वस्थ और दीर्घजीवी

मंत्री मुनि सुमेरमल ने कहा कि तेरापंथ धर्म संघ में बसंत पंचमी को आयोजित होने वाले मर्यादा महोत्सव का दिन आते ही तेरापंथ धर्म संघ के जन्मदाता आचार्यश्री भिक्षु की स्मृति ताजा हो जाती है। उन्होंने वहां क्रांति की म-ाल जलाने का प्रयास किया जहां मर्यादा तो थी, लेकिन उनकी पालना नहीं हो रही थी।
मंत्री मुनि ने कहा कि मर्यादाओं की पूरी तरह पालना हो, लेकिन जहां यह भंग होती नजर आती है तो अंगुली से निर्देि-ात करने का प्रावधान है। मर्यादा का पालन जहां नहीं है वह संघ तेजस्वी नहीं होता है। मर्यादाएं बनाना महत्वपूर्ण नहीं है, इनका पालन किया जाना ज्यादा महत्वपूर्ण है। आचार्यश्री भिक्षु ने सुव्यवस्थित क्रांति का सूत्रपात किया और इनका अक्षरसः पालन करने की प्रेरणा दी। हम इन मर्यादाओं का पालन करके ही संघ की नींव का मजबूत कर पाएंगे।

सेवा केन्द्र पर नियुक्तियां

आचार्यश्री ने मर्यादा महोत्सव के पहले दिन तेरापंथ के निर्धारित सेवा केन्द्रों पर साधु-साध्वियों के सिंघाडों की नियुक्तियां की। मुनि धनजंयकुमार को जैन वि-व भारती, लाडनूं में साध्वी प्रमोदश्री, राजलदेसर में साध्वी कैला-ावती, बीदासर में साध्वी वि-ादप्रज्ञा, श्रीडूंगरगढ में साध्वी स्वर्णरेखा, प्रज्ञाश्री और गंगा-ाहर में साध्वी कनकरेखा को सेवा देने के लिए अधिकृत किया।

मुनि जयंत की छापर सेवा केन्द्र पर नियुक्ति

मर्यादा महोत्सव के प्रथम दिन आचार्यश्री ने एक अनूठा प्रयोग करते हुए अपनी कथनी और करनी में एकता का स्पश्ट संकेत दिया। उन्होंने अपने प्रवचन में बडे पदों पर काम करने वाले साधु-साध्वियों को भी अवसर मिलने पर सेवा करने की प्रेरणा दी। इसको प्रयोग में लेते हुए :ाांतिदूत ने तेरापंथ धर्म संघ के जनसंपर्क प्रभारी मुनि जयंतकुमार को छापर सेवा केन्द्र के लिए मुनि सुमेरमल सुद-ान के साथ नियुक्त किया। आचार्यप्रवर ने छापर केन्द्र के लिए आगामी वर्श के लिए मुनि जयंतकुमार, मुनि तन्मयकुमार, मुनि अनु-ाासनकुमार को वृद्ध संतों की सेवा का दायित्व सौंपा।

250 वर्श पूर्व लिखित मर्यादा पत्र की स्थापना

आचार्यश्री ने तेरापंथ के प्रथम गुरु आचार्य भिक्षु द्वारा 250 वर्श पूर्व लिखित धर्म संघ के संविधान मर्यादा पत्र को माथे से लगाते हुए सर्व प्रथम प्रतिश्ठत किया। उन्होंने कहा कि मर्यादा पत्र हमारा त्राण है, छत्र है और सुरक्षा कवच है। इस मर्यादा पत्र के कारण ही तेरापंथ दीर्घजीवी बना है। उन्होंने मर्यादा महोत्सव के :ुभारंभ की घोशणा करते हुए कहा कि मर्यादा मंत्र को आचार्य भिक्षु ने जिस दूरदर्ि-ाता के साथ लिखा है वह आज अन्यत्र कहीं भी दृश्टिगोचर नहीं होती।

समारोह के प्रारंभ में साध्वी जिनप्रभा ने साध्वी समण की तरफ से और मुनि जंबूकुमार ने संत समुदाय की ओर से सेवा की अर्ज प्रस्तुत की। आचार्यश्री ने समणी मुदितप्रज्ञा को साध्वी और समण गौतमप्रज्ञ को मुनि दीक्षा की स्वीकृति प्रदान की। दोनों को 2 फरवरी को होने वाले दीक्षा समारोह में दीक्षा दी जाएगी। कन्या मंडल और कि-ोर मंडल की ओर से गीत का संगान किया गया। समणीवृंद ने हे ज्योतिपूंज तुमसे हम ज्योति पाते है :ीर्शक से गीत की प्रस्तुति दी। मुनि सुखलाल ने भी विचार व्यक्त किए। संयोजन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

महोत्सव के दूसरे दिन रविवार को अमृत महोत्सव के तृतीय चरण का आयोजन होगा। इसमें वर्धापना का कार्यक्रम होगा। इसमें साधु-साध्वियों द्वारा रोचक प्रस्तुतियां दी जाएगी। इस दौरान महाराश्ट्र के पूर्व मंत्री सुरे-ा दादा जैन भी मौजूद रहेंगे। महोत्सव के अंतिम दिन 30 जनवरी को मुख्य समारोह आयोजित होगा। मर्यादा गीत और उद्घोशणा से कार्यक्रम का :ुभारंभ होगा। इस दौरान अनेक साधु-साध्वियां मर्यादा, व्यवस्था और अनु-ाासन से संबंधित वि-ोश वक्तव्य प्रस्तुत करेंगे। साथ ही मर्यादा पर आस्था प्रकट करने के गीतों की प्रस्तुति देंगे। आचार्यश्री महाश्रमण के नेतृत्व में साधु-साध्वियों की वृहद हाजिरी कार्यक्रम और आचार्यश्री भिक्षु व मर्यादा से संबंधित नव गीत की प्रस्तुति देंगे। उन्होंने बताया कि इस दौरान आचार्यश्री महाश्रमण पूरे दे-ा में और महोत्सव में उपस्थित साधु-साध्वियों के आगामी चातुर्मासों की घोशणा करेंगे।

हर कार्यकर्ता में दिखा जो-ा

आमेट में :ानिवार को प्रारंभ हुए मर्यादा महोत्सव को लेकर तेरापंथ समाज के हरेक कर्यकर्ता में जो-ा नजर आया। व्यवस्था समिति की ओर से लोगों को समारोह स्थल पर ले जाने और लाने के लिए निः-ुल्क वाहनों की व्यवस्था की गई थी। तेरापंथ युवक परिशद के पदाधिकारी वृद्धों की सेवा में तल्लीन नजर आए। व्यवस्था समिति के संयोजक धर्मचंद खाब्या, सह संयोजक सलील लोढा, कोशाध्यक्ष मनसुख गेलडा, ज्ञानचंद मेहता, दलीचंद कच्छारा, कंवरलाल रांका, आवास व्यवस्था समिति के संयोजक अ-ोक गेलडा, बाबूलाल गांधी, गणपतलाल डांगी, तेरापंथ युवक परिशद के अध्यक्ष प्रवीण ओस्तवाल, महावीर हिरण, संतोश भण्डारी, दीपक कोठारी, संजय बोहरा, संदीप हिंगड, महिला मंडल अध्यक्ष मंजू गेलडा, मंत्री रेणु छाजेड, मीना गेलडा, कन्या मंडल की ममता पीतलिया, स्वीटी दक, खु-ाबू गेलडा, तेरापंथी सभा अध्यक्ष कन्हैयालाल कच्छारा, तेजप्रका-ा कोठारी, इन्द्रमल गेलडा,-ांतिलाल बाफना मोर्चा संभाले हुए थे।

अणुव्रत लेखक पुरुस्कार प्रो. उदयभानु को

आमेटः 28 जनवरी

अणुव्रत महा समिति द्वारा गठित अणुव्रत लेखक मंच किसी एक विशिष्ट लेखक को प्रति वर्ष अणुव्रत लेखक पुरस्कार से सम्मानित किया जाता हैं। वर्ष 2010 का पुरस्कार राजस्थान के आमेट में आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में आयोजित समारोह में हरियाण के लोकप्रिय लेखक कवि प्रो. उदयभानु हंस(हिसार) को दिया

गया। इस अवसर पर आचार्य महाश्रमण ने कहा कि अच्छा कवि वह होता है, जिसकी कविता में शब्द और भाव सुन्दर होते है। शब्दों कि योजना सुन्दर होती है। कविता पाठ करने वाला कुशल और चरित्रवान होता है। अणुव्रत लेखक पुरस्कार विद्वान लेखकों का ही नही विद्धता और ज्ञान का सम्मान है। कार्य धर्म का सम्मान है। अणुव्रत लेखक मंच ने उदयभानु हंस का चयन कर एक उपयुक्त व्यक्ति का चयन किया है। वे गुरूदेव तुलसी के समय से ही अणुव्रत से जुड़े है। उनकी लेखनी सदा मानवता, न्याय, देश प्रेम और परोपकार के लिए आगे बढ़ी है। इस पुरस्कार से पूरे लेखक जगत का सम्मान हुआ है। डॉ. हंस ने अणुव्रत और मानवता के लिए अपने समर्पण की भावना व्यक्त की तथा कवि की अत्यन्त भौतिक चतुष्पदिय सस्वर और सुनामी लेखनी होनी चाहिए। अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने अणव्रत पाक्षिक पत्र के महत्व पर विशेष प्रकाश डालते हुए कहा कि यह पत्र स्वास्थ्य लेखन का प्रमुख माध्यम है। इस के साथ मुनिश्री ने प्रभावी प्ररेणा देते हुए घर घर में अणुव्रत पत्र पहुंचाने का आह्वान किया। अणुव्रत प्रवक्ता डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने लेखक के महत्व को रेखांकित करते हुए उसे सामान्य क्रान्ति का सफल साधन बताया। अणुव्रत महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा ने स्वागत उदबोधन दिया तथा उपाध्यक्ष डालचन्द्र कोठारी ने प्रशस्ति पत्र का वाचन किया। कार्यक्रम के दौरान समिति के पदाधिकारीयो नें डॉ. हंस को प्रशस्ति-पत्र भेंट किया।